A brief history of Psychology

असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत असामान्य व्यवहार एवं असामान्य मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। जिसकी विषय वस्तु मूलतः **Maladaptive behaviour, personality disturbances** एवं **disorganized personality** का अध्ययन करने एवं उसके निदान के तरीकों पर विचार करने से संबंधित है। असामान्य व्यवहार का अध्ययन कोई नयी पहल नहीं है बल्कि इसका एक लम्बा रोचक इतिहास रहा है। असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास को मूलतः तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त कर अध्ययन किया जाता है :- **(i) Prescientific Period (ii) Modern Age of Abnormal Psychology (iii) Abnormal Psychology today. Prescientific Period** का इतिहास मूलतः अंधविश्वास पर आधारित था।

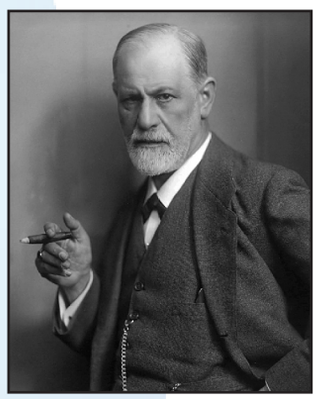

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में **Sigmund Freud** पहले ऐसे मनोरोगविज्ञानी **(Psychiatrist)** थे जिन्होंने मानसिक रोगों के कारणों की व्याख्या के क्रम में दैहिक कारकों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक कारकों पर अत्यधिक बल दिया। असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड का **Free association method, Uncouscious, dream analysis, psycho sexual development, defence mechanism** आदि प्रधान है। फ्रायड का सम्पर्क जोसेफ ब्रियुअर से हुआ जिससे उन्होंने **Psychoneurosis** के रोगियों पर सम्मोहन विधि का प्रयोग करना सीखा। **Freud** ने **observe** किया कि सम्मोहित अवस्था में रोगी बिना किसी हिचकिचाहट के अपने संवेगों, संघर्षों एवं भावनाओं को प्रगट करता है जिसका सीधा सम्बन्ध रोगियों के रूग्नावस्था से होता है। इसे **Freud** और **Breuer** ने मिलकर **"Cathartic method"** की संज्ञा दी। अपने अनुभवों एवं रोगियों के निरीक्षण के आधार पर उन्होंने यह भी बतलाया कि अधिकतर मानसिक संघर्ष तथा दुश्चिन्ता **(anxiety)** का श्रोत अचेतन **(unconscious)** होता है। ऐसे मानसिक संघर्ष, दुश्चिन्ता एवं दुखद अभिप्रेरकों एवं संवेगों को व्यक्ति अपनी चेतन **(consciousness)** से हटाकर अचेतन **(unconscious)** में दमित **(Repress)** कर देता है। इसे उन्होनें दमन **(repression)** की संज्ञा दी। उन्होंने यह भी बतलाया कि दमित अभिप्रेरक एवं इच्छाएँ व्यक्ति के व्यवहारों को अचेतन रूप से नियंत्रित करती है। दमित इच्छाओं एवं अभिप्रेरकों को चेतन में लाने की दो विधियों पर उन्होंने अधिक बल डाला है- मुक्त साहचर्य विधि **(free association method)** तथा स्वप्न विश्लेषण **(dream analysis)**। इन विधियों के सहारे कार्य करके उन्होंने **(The Interpretation of Dream)** प्रकाशित किया। मानसिक रोगियों की चिकित्सा हेतु उन्होंने मनोविश्लेषण विधि **(psychoanalytic method)** का प्रतिपादन किया जिसमें मानसिक रोगियों के अचेतन

से दमित इच्छाओं को मुक्त साहचर्य विधि तथा स्वप्न विश्लेषण विधि द्वारा कुरेदकर निकाला जाता है तथा उसके आधार पर रोग का लक्षण समझा जाता है तथा फिर उसी के अनुकूल उसका उपचार किया जाता है।

आसामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक काल (1801-1950) में एक और ऐसे मनोरोगविज्ञानी (Psychiatrist) हैं जिनके योगदान के लिए इतिहास आभारी है। वे हैं- एडॉल्फ मेयर (Adolf Meyer, 1866-1950)। मेयर के विचारधारा को मनोजैविक दृष्टिकोण (Psychobiological viewpoint) कहा जाता है। मेयर के इस विचारधारा के अनुसार असामान्य व्यवहार शारीरिक और मानसिक दोनों कारणों से होता है। इसलिए उनका मत था कि इसका उपचार मानसिक (Psychogenic) तथा दैहिक (Somatogenic) दोनों आधारों पर किया जाना चाहिए। इस तरह से उनके इस विचारधारा में स्पष्टतः क्रेपलिन तथा ग्रिसिंग के दैहिक विचारों एवं फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विचारों का एक मिश्रण देखने को मिलता है। मेयर के मनोजैविक सिद्धान्त के अनुसार मानसिक रोग की उत्पत्ति में व्यक्ति का सामाजिक वातावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक होता है। यही कारण है कि रेनी ने इसके सिद्धान्त का नाम मनोजैविक सामाजिक सिद्धान्त (Psychobiosocial theory) भी रखा है। मेयर का विचार था कि मानसिक रोगियों की उपयुक्त चिकित्सा तभी सम्भव है जब उसके जैविक पदार्थों जैसे हारमोन्स, विटामिन को संतुलित करते हुए उसके घरेलू वातावरण के अंतर पारस्परिक सम्बन्धों (interpersonal relationship) को भी सुधारा जाय।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मेयर का विचार था कि असामान्यता को समझने के लिए एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण (holistic approach) अपनाना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, असामान्यता का अध्ययन जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तीनों दृष्टिकोणों से करना आवश्यक है।

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध (first half) तक मानसिक अस्पताल ही मानसिक रोगियों के उपचार का मात्र सहारा बना रहा। परन्तु उसके बाद धीरे-धीरे इन मानसिक अस्पतालों के काले करतूत लोगों के सामने आने लगे और उनके प्रति आम जनता की मनोवृत्ति परिवर्तित होती गयी। अमेरिका के बहुत से मानसिक अस्पतालों में देखा गया कि वहाँ जो रोगियों को भर्ती कराया जाता था, उनके साथ अमानवीय व्यवहार इतनी क्रूरता के साथ किया जाता था कि उनका मानसिक रोग कम होने के बजाय बढ़ता ही जाता था। कुछ का तो इसी में देहान्त भी हो जाता था। फलतः मानसिक अस्पताल में रोगियों को रखने के प्रति लोगों की मनोवृत्ति खराब हो गयी। आजकल अमेरिका में इन मानसिक अस्पतालों की जगह सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community Mental Health Centres) ने ले लिया है। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य मानसिक रोगियों

को मानवीय ढंग से उत्तम उपचार करना है। इन केन्द्रों द्वारा मूलतः पाँच तरह की सेवाएँ की जाती है- चौबीस घंटा आपातकालीन देखभाल, अल्पकालीन अस्पताली सेवा, आंशिक अस्पताली सेवा, बाह्य रोगियों की देखभाल तथा प्रशिक्षण एवं परामर्श कार्यक्रम। अमेरिका एवं कनाडा में ऐसे केन्द्रों की संख्या काफी अधिक है जिन्हें अपने कार्य के लिए पर्याप्त सरकारी सहायता मिलती है।

अमेरिका एवं कनाडा में आजकल सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र का एक नवीनतम रूप जिसे संकटकाल हस्तक्षेप केन्द्र कहा जाता है, विकसित हुआ है। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य मानसिक रोगियों को तुरंत सहायता पहुँचाना होता है। इन केन्द्रों में चिकित्सक रात या दिन के किसी भी समय मात्र दूरभाष से सूचना प्राप्त कर मानसिक रोगियों का उपचार प्रारम्भ करने के लिए तत्पर रहते हैं। इस ढंग का दूरभाष केन्द्र सबसे पहले-पहल लास एन्जिल्स के चिल्ड्रेन अस्पताल में प्रारम्भ किया गया। ऐसे दूरभाष केन्द्रों की सफलता से प्रभावित होकर अमेरिका के बढ़े-बड़े शहरों एवं विश्वविद्यालय कैम्पसों में भी इसी तरह का आपातकालीन सेवा प्रदान करने वाले केन्द्र अधिकाधिक संख्या में खोले जा रहे हैं। संसार के अन्य देशों में भी इस तरह के केन्द्र तेजी से खुल रहे हैं।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि असामान्य मनोविज्ञान का इतिहास जो तीन मुख्य काल में विभक्त है, में काफी उतार-चढ़ाव रहा है। प्रारंभिक काल में यानी पूर्ववैज्ञानिक काल में असामान्यता मूलतः देवी-देवताओं का प्रकोप या दुरात्मा का प्रवेश से उत्पन्न हुआ माना जाता था। आधुनिक युग में इस विचार की मान्यता जाती रही है और मानसिक असामान्यता को एक प्रकार का मानसिक रोग समझकर उसके मानवीय उपचार पर बल डाला जाता है। इस काल में असामान्यता का कारण सामाजिक वातावरण भी बतलाया गया। 1950 के बाद का असामान्य मनोविभान में पहले से चले आ रहे मानसिक अस्पताल में किये जा रहे उपचार को अमानवीय ठहराया गया और उनकी आलोचना की गयी। ऐसा विचार लोगों के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि इन मानसिक अस्पतालों में भर्त्ती कर देने से मानसिक रोग की तीव्रता घटने के बजाय बढ़ने लगती है। अब इन मानसिक अस्पतालों की जगह भिन्न-भिन्न प्रकार के सामूदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्रों **(Community mental health centres)** ने ले लिया है। संकटकाल हस्तक्षेप केन्द्र **(Crisis Intervention Centres)** ऐसे ही केन्द्रों का नवीनतम नमूना है जिसकी शुरूआत तो अमेरिका में हुई परन्तु इसकी बढ़ती सफलता ने अन्य देशों को भी ऐसे केन्द्रों की शुरूआत करने के लिए मजबूर कर दिया है।